भूमिका ॥

यह पुस्तक सुगम होने से बालकों को पढ़ाने योग्य है और सामान्य बोध वाले पुरुष सर्वसाधारण में व्याख्यान देते समय इस के नीतिशिक्षा सम्बन्धी उत्तम २ श्लोकों को याद किये हों और भाषा में लिखा अर्थ भी जानते हों तो अति उत्तम प्रभावोत्पादक श्लोक बीच २ में बोलने से व्याख्यान की शोभा बढ़ा सक्ते हैं इस कारण भाषार्थ सहित प्रकाशित करना आवश्यक समझ पाठकों के सामने रखता हूं. महाशय ! इस के गुण ग्रहण कीजिये ॥ छुट्टनलाल स्वामी

(बीस २० का नाम कोड़ी है) ।

उत्तम रेशम के यज्ञोपवीत ३) कोड़ी महाराजों लायक ।

सूत के दर्जा प्रथम १) कोड़ी दर्जा दूसरा ॥) कोड़ी

धर्म्मार्थ बांटने वालों को अर्ध मोल, विशेष लेने वालों को कमीशन भी दिया जायगा पत्रव्यवहार करो पसन्द न आवें वापिस कर दो केवल डाकव्यय का टोटा ग्राहक को होगा । अवश्य देखिये ॥

छुट्टनलालस्वामी परीक्षितगढ़ ज़िला, मेरठ

श्रीसच्चिदानन्दात्मने ब्रह्मणे नमः

चाणक्यनीतिः ॥

नानाशास्त्रोद्धृतं वक्ष्ये राजनीतिसमुच्चयम् ।
सर्व्वबीजमिदं शास्त्रं चाणक्यं सारसङ्ग्रहम् ॥
मूलसूत्रं प्रवक्ष्यामि चाणक्येन यथोदितम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण मूर्खो भवति पण्डितः ॥

अनेक शास्त्रों से मत लेकर राज नीति के गुच्छे "चाणक्यसारसंग्रह" सर्व बीजरूप शास्त्र को कहता हूं मूल सूत्र जैसा चाणक्य ने कहा है जिस के जानने से मूर्ख भी पण्डित हो जाय उस को वर्णन करता हूं ।

(ये श्लोक किसी पुस्तक लिखने वाले ने बनाये हैं)

विद्वत्त्वञ्च नृपत्वञ्च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्व्वत्र पूज्यते ॥ १ ॥

विद्वान् की महिमा—विद्या और राज्य (को सब बड़ा मानते हैं) समान कभी नहीं हो सकता, राजा का अपने देश में मान होता है विद्वान् का सब देशों में ॥ १॥

पण्डिते च गुणाः सर्व्वे मूर्खे दोषा हि केवलम् ।
तस्मान्मूर्खसहस्त्रेषु प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ २ ॥

पण्डित में सब गुण होते हैं मूर्ख में दोष ही होते हैं इस कारण हज़ारों मूर्खों से एक पण्डित अच्छा होता है ॥ २ ॥

अब पण्डित के लक्षण कहते हैं ॥

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।
आत्मवत् सर्व्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥ ३ ॥

पर स्त्री को माता सम, पर द्रव्य को ढेले सम, अपना सा भाव सुख दुःख का सब प्राणिमात्र में जाने सो पण्डित कहाता है ॥ ३ ॥

किं कुलेन विशालेन गुणहीनस्तु यो नरः ।
अकुलीनोऽपि शास्त्रज्ञो दैवतैरपि पूज्यते ॥ ४ ॥

सुन्दर कुल से क्या है जिस जन में गुण नहीं। शास्त्र का जानने वाला चाहे अकुलीन भी हो सो देवतों से पूजा जाता है (विद्वान् उस की ख़ातिर करते ही हैं) ॥४॥

रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥ ५ ॥

रूप और जवानी से भर पूर अच्छे कुल में पैदा हुए भी विद्याहीन जन शोभा नहीं देते जैसे केसू (ढाक) के फूल लाल २ सुन्दर भी हों परन्तु सुगन्ध न होने से अच्छे नहीं ॥ ५ ॥

नक्षत्रभूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः ।
पृथिवीभूषणं राजा विद्या सर्व्वस्य भूषणम् ॥ ६ ॥

तारागण का भूषण (शोभा बढ़ाने वाला) चन्द्रमा है, स्त्रियों का पति, धरती का भूषण राजा है, सब का भूषण विद्या है ॥ ६ ॥

दूरतः शोभते मूर्खो लम्बशाटपटावृतः ।
तावच्च शोभते मूर्खो यावत्किञ्चिन्न भाषते ॥ १३ ॥

दूर से ही मूर्ख शोभित होता है लंबा चौड़ा वस्त्र पहिरे ओढ़े, जबलों मुख से नहीं बोलता तबलों ही सुहाता है (बोलने से पोल खुल जाती है) ॥१३॥

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम् ।
नीचादप्युत्तमा विद्या स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि ॥ १४ ॥

विष से भी अमृत लेना चाहिये, अपवित्र पदार्थ से भी सुवर्ण लेलेना चाहिये इसी प्रकार नीच पुरुष से भी विद्या लेनी चाहिये तथा स्त्रीरूप रत्न नीचे कुल से भी लेलेना ॥ १४ ॥

उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे ।
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः ॥ १५ ॥

(उत्सव) विवाहादि कार्य्य में (व्यसन) दुःख में (दुर्भिक्ष) अकाल में (शत्रुविग्रह) शत्रु से लड़ाई के समय (राजद्वार) मुकद्दमे आदि में (श्मशान) मृत्यु समय में जो साथी रहे सो बान्धव कहाता है ॥ १५ ॥

परोक्षे कार्य्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्ज्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥ १६ ॥

पीछे कार्य्य को विगाड़े मुख पर प्यारा बोलै मीठी २ बातें करै ऐसे मित्र से दूर रहो जैसे ज़हर के घड़े के ऊपर दूध भरा हो उसे दूर रक्खे ॥ १६ ॥

सकृद्दुष्टञ्च मित्रं यः पुनः सन्धातुमिच्छति ।
स मृत्युमुपगृह्णाति गर्भमश्वतरी यथा ॥ १७ ॥

एक बार भी जिस मित्रने दुष्टता कर लई हो ऐसे मित्र से जो मनुष्य फिर मेल चाहता है वह मौत को बुलाता है जैसे गर्भ को खिचरी (पशु*) ॥ १७ ॥

न विश्वसेदविश्वस्तं मित्रञ्चापि न विश्वसेत् ।
कदाचित्कुपितं मित्रं सर्वदोषं प्रकाशयेत् ॥ १८ ॥

विश्वासघाती का विश्वास न करे मित्र का भी विश्वास न करैं कदाचित् मित्र को कोप हो जाय तौ सब दोषों को प्रकाशित करदेगा ॥ १८ ॥

---

*गधा और घोड़ी से जो पुत्री हो उसे खिचरी कहते हैं वह खिचरी यदि गर्भ धारण करे तौ सन्तान होने पर उस की मृत्यु आवश्यक सुनते हैं ॥

जानीयात् प्रेषणे भृत्यान् बान्धवान् व्यसनागमे ।
मित्रञ्चापत्काले च भार्य्यांश्च विभवक्षये ॥ १९ ॥

भेजने से (उसी समय जाय या नहीं जाय) नौकर को जांचे, भाई बान्धवों को दुःख में जांचे, मित्र को आपत्तिकाल में जांचे और स्त्री को निर्धनता में जांचे ॥१९॥

उपकारगृहीतेन शत्रुणा शत्रुमुद्धरेत् ।
पादलग्नं करस्थेन कण्टकेनेव कण्टकम् ॥ २० ॥

प्रथम एक शत्रु को उपकार करके वश में लावे फिर उस शत्रु से दूसरे शत्रु का नाश करावे अर्थात् उपकारगृहीत शत्रु से ही शत्रु को ऐसे दूर करे जैसे पाद में लगे कांटे को हाथ में लिये कांटे ही से उभार कर निकालते हैं ॥ २० ॥

न कश्चित् कस्यचिन्मित्रं न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः ।
कारणेन हि ज्ञायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥ २१ ॥

न कोई किसी का मित्र है न कोई किसी का शत्रु, कारण से ही मित्र और शत्रु जाने जाते हैं ॥ २१ ॥

दुर्जनः प्रियवादी च नैतद् विश्वासकारणम् ।
मधु तिष्ठति जिह्वाग्रे हृदये तु हलाहलम् ॥ २२ ॥

खोटा मनुष्य कैसी ही मीठी २ बात कहै परन्तु उस का (विश्वास) भरोसा न करना क्योंकि उस की जीभ पर शहद और हृदय में ज़हर (हलाहल) भरा है२२

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयङ्करः ? ॥ २३ ॥

खोटे जन से दूर रहना ही ठीक है चाहे वह विद्यायुक्त भी हो क्योंकि मणि से युक्त भी सर्प्प क्या भयंकर नहीं है ? ॥ २३ ॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरःसर्पात् क्रूरतरः खलः ।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्य्यते ॥ २४ ॥

सर्प भी क्रूर है मूर्ख भी क्रूर है परन्तु सर्प से अधिक क्रूर मूर्ख है क्योंकि सर्प तो मन्त्र तथा ओषधि के वश में है परन्तु मूर्ख को काहे से हटावे ॥२४॥

नखिनाञ्च नदीनाञ्च शृङ्गिणां शस्त्रपाणिनाम् ।
विश्वासो नैव कर्त्तव्यः स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥ २५ ॥

(नखी) जिन के पैने २ नाखून हैं जैसे बिल्ली भेड़िया सिंहादि, नदी, शृङ्गी सींगवाले बैल भैंसादि, जिन के हाथ में (शस्त्र) हथियार है इन का विश्वास न करै अर्थात् सावधान रहे तथा स्त्रियों का और राजकुलों का भी विश्वास न करै ॥ २५ ॥

हस्ती हस्तसहस्रेण शतहस्तेन वाजिनः ।
शृङ्गिणो दशहस्तेन स्थानत्यागेन दुर्जनः ॥ २६ ॥

हाथी से हज़ार हाथ से बच सक्ता है, घोड़े से सौ हाथ से, सींग वाले पशुसे १० हाथ से बच सक्ता है परन्तु दुर्जन से स्थान त्यागने पर बच सक्ता है ॥२६॥

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि ।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि ॥ २७ ॥

आपत्ति के वास्ते धन की रक्षा करै, स्त्रियों की रक्षा धन से भी करै । परन्तु आत्मा की रक्षा सदा करै स्त्रियों से भी और धन से भी ॥२७॥

परदारान् परद्रव्यं परीवादं परस्य च ।
परिहासं गुरोःस्थाने चापल्यञ्च विवर्ज्जयेत् ॥ २८ ॥

पर स्त्रियों, पर द्रव्य, पराई निन्दा तथा गुरु के स्थान पर हंसी और चपलता का भी त्याग करे ॥२८॥

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवीन्त्यजेत् ॥ २९ ॥

एक कुल के अर्थ एक मनुष्य को त्यागदे, ग्राम के लिये कुल को त्यागदे, ग्राम समुदाय जिला के लिये ग्राम को त्यागदे, तथा आत्मा के लिये पृथिवी भर को त्यागदे ॥२९॥

चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन बुद्धिमान् ।
नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ॥ ३० ॥

बुद्धिमान् एक पाद से चलता है तथा एक को धरती पर ठहराता है इसी प्रकार बिना देखे दूसरे स्थान के, पहिला स्थान न त्यागे ॥३०॥

लुब्धमर्थेन गृह्णीयात् क्रुद्धमञ्जलिकर्म्मणा ।
मूर्खं छन्दोऽनुवृत्तेन तथा सत्येन पण्डितम् ॥ ३१ ॥

लोभी को धन से क्रुद्ध को हाथ जोड़ कर, मूर्ख को (छन्दोनुवृत्त) जैसे कहैं वैसे ही चलकर (हां में हां से) और पण्डित को सत्य से वश में करे ॥ ३१ ॥

अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनञ्चापमानञ्च मतिमान्न प्रकाशयेत् ॥ ३२ ॥

गया धन, मन का दुःख , घर का खोटा चरित्र, ठगी और (अपमान) बेइज़्ज़ती को विद्वान् गुप्त रखे (सब को न सुनावे) ॥३२॥

धनधान्यप्रयोगेषु तथा विद्यागमेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥ ३३ ॥

धन तथा अन्न के व्यापार में, विद्या पढ़ने में, भोजन करने में, विवाहादि व्यवहार में, लज्जा त्यागने से मनुष्य सुखी रहता है ॥ ३३ ॥

धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पञ्चमः ।
पञ्च यत्र न विद्यन्ते तत्र वासं न कारयेत् ॥ ३४ ॥

साहूकार, यज्ञ कराने योग्य पण्डित, राजा, नदी, पांचवां वैद्य जहां यह पांच पदार्थ न हों उस स्थान में निवास न करे ॥ ३४ ॥

यस्मिन्देशे न सम्मानं न प्रीतिर्न च बान्धवाः ।
न च विद्यागमः कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत् ॥ ३५ ॥

जिस देश में प्रतिष्ठा, प्रीति, और बांधव न हों, तथा विद्या प्राप्ति भी न हो ऐसे देश को त्यागदे ॥ ३५ ॥

मनसा चिन्तितं कर्म्म वचसा न प्रकाशयेत् ।
अन्यलक्षितकार्य्यस्य यतः सिद्धिर्न जायते ॥ ३६ ॥

मन में सोचा कार्य वाणी से सब को न सुनावे क्योंकि औरों के जानने से कार्यसिद्धि नहीं होती ॥ ३६ ॥

कुदेशञ्च कुवृत्तिञ्च कुभार्य्यां कुनदीं तथा ।
कुद्रव्यञ्च कुभोज्यञ्च वर्ज्जयेच्च विचक्षणः ॥ ३७ ॥

खोटा देश, खोटी वृत्ति, खोटी स्त्री, खोटी नदी, खोटा द्रव्य और खोटा भोजन, विद्वान् त्यागदे ॥ ३७ ॥

ऋणशेषोऽग्निशेषश्च व्याधिशेषस्तथैव च ।
पुनश्च वर्द्धते यस्मात्तस्माच्छेषन्न कारयेत् ॥ ३८ ॥

ऋण (कर्ज़ा), अग्नि, रोग, इन्हें शेष न छोड़े क्योंकि छोड़ने पर फिर बढ़ जाते हैं ॥ ३८ ॥

चिन्ता ज्वरो मनुष्याणां वस्त्राणामातपो ज्वरः ।
असौभाग्यं ज्वरः स्त्रीणामश्वानां मैथुनं ज्वरः ॥ ३९ ॥

चिन्ता मनुष्यों का ज्वर है, वस्त्रों का ज्वर धूप है, वैधव्य स्त्रियों का ज्वर है, घोड़े का मैथुन ज्वर है ॥ ३९ ॥

अस्ति पुत्रो वशो यस्य भृत्यो भार्या तथैव च ।
अभावे सति संतोषः स्वर्गस्थोऽसौ महीतले ॥ ४० ॥

जिस के पुत्र वश में हो तथा स्त्री, और नौकर वश में हों और यदि स्त्री पुत्र नौकर आदि न हों तो सन्तोष ही हो, वह मनुष्य पृथिवी पर भी स्वर्ग के समान है ॥ ४० ॥

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्यश्चोत्तरदायकः ।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः ॥ ४१ ॥

खोटी स्त्री, मूर्ख मित्र, उत्तर देने वाला नौकर, सर्प वाले घर में का वास जिस को इतने दुःख हों उसके मृत्यु ही है इस में कोई संशय नहीं ॥ ४१ ॥

माता यस्य गृहे नास्ति भार्या चाप्रियवादिनी ।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथारण्यं तथा गृहम् ॥ ४२ ॥

जिस के घर में माता न हो और स्त्री लड़ाका हो उसे वन को निकल जाना ही ठीक है क्योंकि जैसा ही उसे वन वैसा ही घर ॥ ४२ ॥

ऋणकर्ता पिता शत्रुर्माता च व्यभिचारिणी ।
भार्य्या रूपवती शत्रुः पुत्रः शत्रुः कुपण्डितः ॥ ४३ ॥

(कर्ज़ा) ऋण करने वाला पिता, व्यभिचारिणी माता, अतिरूपवती स्त्री, मूर्ख पुत्र, यह चारों मनुष्य के शत्रु होते हैं ॥ ४३ ॥

कोकिलानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिव्रतम् ।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥ ४४ ॥

कोकिलाओं का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत्त धर्म है, कुरूप मनुष्य का रूप विद्या होती है, तपस्वियों का रूप क्षमा है ॥४४॥

अविद्यं जीवनं शून्यं दिशः शून्या अबान्धवाः ।
पुत्रहीनं गृहं शून्यं सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ४५ ॥

विद्याहीन मनुष्य का जीवन शून्य है, बन्धुहीन देश शून्य है, पुत्रहीन घर शून्य है तथा धनहीन का जीवन, देश, घर, सब शून्य होते हैं ॥४५॥

अदाता वंशदोषेण कर्म्मदोषाद्दरिद्रता ।
उन्मादो मातृदोषेण पितृदोषेण मूर्खता ॥ ४६ ॥

कुल दोष से अदातृत्व, कर्म दोष से दरिद्रता, मातृदोष से पगलापन, पिता के दोष से मूर्खता, इन चार दोषों से चार बातें होती हैं ॥४६॥

गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ।
पतिरेको गुरुः स्त्रीणां सर्वत्राभ्यागतो गुरुः ॥ ४७ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, तीनों का गुरु अग्नि है और सब वर्णों का गुरु ब्राह्मण, स्त्रियों का गुरु भर्त्ता (पति) होता है । सब का गुरु अभ्यागत है ॥ ४७ ॥

अतिदर्पे हता लङ्का अतिमाने च कौरवाः ।
अतिदाने बलिर्बद्धः सर्वमत्यन्तगर्हितम् ॥ ४८ ॥

अति अहंकार से लंका मारी गई, अति अभिमान से कौरव (दुर्योधनादि) मारे गये, अति दान से बलि बान्धा गया इस से अतिभाव सब जगह अच्छा नहीं है ॥ ४८ ॥

वस्त्रहीनस्त्वलङ्कारो घृतहीनश्च भोजनम् ।
स्तनहीना च या नारी विद्याहीनश्च जीवनम् ॥ ४९ ॥

जैसे वस्त्र न हो गहना फीका है, घृतहीन भोजन फीका, स्तनहीन स्त्री फीकी होती है; इसी प्रकार विद्याहीन मनुष्य का जीवन भी फीका होता है ॥ ४९ ॥

भोज्यं भोजनशक्तिश्च रतिशक्तिर्वराः स्त्रियः ।
विभवे दानशक्तिश्च नाल्पस्य तपसः फलम् ॥ ५० ॥

(खाद्य पदार्थ) भोजन हों और भोजन की शक्ति भी हो, रतिशक्ति हो और सुन्दर स्त्री भी हों, धनादि हों दानशक्ति भी हो, यह थोड़े तप का फल नहीं है ॥ ५० ॥

पुत्रप्रयोजना दाराः पुत्रः पिण्डप्रयोजनः ।
हितप्रयोजनं मित्रं धनं सर्वप्रयोजनम् ॥ ५१॥

मनुष्य को स्त्रियों से पुत्र प्राप्त होते हैं, पुत्र से भोजनादि प्राप्त होते हैं, मित्र से हित होता है, धन से सब काम होते हैं ॥ ५१ ॥

दुर्लभं प्राकृतं वाक्यं दुर्लभः पण्डितः सुतः ।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः ॥ ५२ ॥

वेदादि शास्त्रोक्त वाक्य, पण्डित पुत्र, अपने सदृश स्त्री, प्यारा स्वजन; यह चार पदार्थ मिलने (मुश्किल) दुर्लभ हैं ॥ ५२ ॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥ ५३ ॥

पहाड़ २ पर मणि, प्रत्येक हाथी के मस्तक में मोती नहीं होते । इसी प्रकार सब देशों में साधु और वन वन में चन्दन भी नहीं मिलते ॥ ५३ ॥

अशोच्यो निर्द्धनः प्राज्ञोऽशोच्यः पण्डितबान्धवः ।
अशोच्या विधवा नारी पुत्रपौत्रप्रतिष्ठिता ॥ ५४ ॥

निर्धन विद्वान् को सोच न करना चाहिये, जिस के भाई भी पण्डित हों उसे भी कुछ सोच न करना चाहिये, जिस के बेटे पोते हों उस विधवा को भी सोच न करना चाहिये ॥ ५४ ॥

अविद्यः पुरुषः शोच्यः शोच्यं मैथुनमप्रजम् ।
निराहाराः प्रजाः शोच्याः शोच्यं राज्यमराजकम् ॥ ५५ ॥

बिना पढ़े मनुष्य, बिन सन्तान स्त्रीसंग, भूखी प्रजा, जिस राज्य पर राजा न हो वह राज्य इन चार बातों का हमेशा सोच करना चाहिये ॥५५॥

कुलीनैः सह सम्पर्कं पण्डितैः सह मित्रताम् ।
ज्ञातिभिश्च समं सख्यं कुर्वाणो नावसीदति ॥ ५६ ॥

कुलीनों के साथ बैठना, पण्डितों से मित्रता, बिरादरी के साथ बराबरी जो मनुष्य करता है उसे कभी दुःख नहीं होता ॥ ५६ ॥

कष्टा वृत्तिः पराधीना कष्टो वासो निराश्रयः ।
निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा दरिद्रता ॥ ५७ ॥

पराधीन रोजगार, बिन किसी आश्रय के वास कठिन है इसी प्रकार निर्धन जन की बुद्धि स्थिर होनी कठिन है और सब बातें दरिद्रता में कठिन हैं ॥५७॥

तस्करस्य कुतो धर्म्मो दुर्जनस्य कुतः क्षमा ।
वेश्यानाञ्च कुतः स्नेहः कुतः सत्यञ्च कामिनाम् ॥ ५८ ॥

जो मनुष्य चोर है उस का धर्म कहां, खोटे जन को क्षमा कहां, वेश्या को स्नेह कहां, कामी जनों को सत्य कहां प्राप्त हो सकता है अर्थात् कहीं नहीं ॥५८॥

प्रेषितस्य कुतो मानः कोपनस्य कुतः सुखम् ।
स्त्रीणां कुतः सतीत्वञ्च कुतः प्रीतिः खलस्य च ॥ ५९ ॥

हरकारे का मान (प्रतिष्ठा) कहां, क्रोधी को सुख कहां, स्त्रियों में पतिव्रत धर्म कहां, दुष्ट में प्रीति कहां (अर्थात् बहुत कम होती है) ॥ ५९ ॥

दुर्बलस्य बलं राजा बालानां रोदनं बलम् ।
बलं मूर्खस्य मौनित्वं चौराणामनृतं बलम् ॥ ६० ॥

दुर्बल का बल राजा है, बालकों का बल रोना है, मूर्ख का बल चुप है, चोरों को झूठ का बल होता है ॥ ६० ॥

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवं परिषेवते ।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ॥ ६१ ॥

जो मनुष्य प्राप्त पदार्थ को छोड़ अप्राप्त की आशा से भागता है उस के प्राप्त पदार्थ का नाश हो जाता है और अप्राप्त तो नष्ट ही है ॥६१॥

शुष्कं मांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥ ६२ ॥

सूखा मांस, वृद्धस्त्रीभोग, कन्याराशिस्थ सूर्य्य, अध जमा दधि, प्रातःकाल मैथुन और निद्रा यह छः पदार्थ प्राण हर्ता हैं अर्थात् बलहानि करते हैं ॥ ६२ ॥

सद्यो मांसं नवान्नञ्च बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकञ्चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥ ६३ ॥

ताज़ा मांस, नया अन्न, सोलह वर्ष की जवान स्त्री का भोग, दूधपान, घृत, गरम जल, यह छः चीज़ प्राण को पुष्ट करती हैं (यह नीति केवल बल-वृद्धि वा बलहानि की द्योतक है धर्माधर्म का विचार इस में नहीं है) ॥ ६३ ॥

सिंहादेकं बकादेकं षट् शुनस्त्रीणि गर्द्दभात् ।
वायसात् पञ्च शिक्षेच्च चत्वारि कुक्कुटादपि ॥ ६४ ॥

मनुष्य को चाहिये कि सिंह से एक शिक्षा ले, तथा बगले से भी एक शिक्षा ले, कुत्ते से छः, खर से तीन, काक से पांच, मुर्गे से चार शिक्षा सीखे ॥६४॥

(आगे स्पष्ट बताते हैं)

प्रभूतमल्पकार्य्यं वा यो नरः कर्त्तुमिच्छति ।
सर्वारम्भेण तत्कुर्य्यात् सिंहादेकं प्रकीर्त्तितम् ॥ ६५ ॥

थोड़ा वा बहुत जो मनुष्य कार्य्य करना चाहता है उसमें सम्पूर्ण बल से काम ले यह सिंह से शिक्षा लेनी कही है ॥ ६५ ॥

सर्वेन्द्रियाणि संयम्य बकवत् पण्डितो जनः ।
कालदेशोपपन्नानि सर्वकार्य्याणि साधयेत् ॥ ६६ ॥

सब इन्द्रियों को एकाग्र कर देश और समय देख सब कार्यों का साधन करे विद्वान् मनुष्य को यह बगले से एक शिक्षा है ॥ ६६ ॥

 बह्वाशी स्वल्पसन्तुष्टः सुनिद्रः शीघ्रचेतनः ।

प्रभुभक्तश्च शूरश्च ज्ञातव्याः षट् शुनो गुणाः ॥ ६७ ॥

१ बहुत भोजन करे, २ न मिले तो थोड़े ही में सन्तोष करे रहे, ३ सुनिद्रावान् (ज़रा खटके पर जगना) ४ शीघ्र ही चेतन होना, ५ अपने स्वामी का भक्त होना, ६ शूरता ये छः गुण कुत्ते के हैं (मनुष्य को शिक्षा देते हैं) ॥६७॥

अविश्रामं वहेद्भारं शीतोष्णञ्च न विन्दति ।

सन्तोषश्च तथा नित्यं त्रीणि शिक्षेत गर्दभात् ॥ ६८ ॥

बिना विश्राम बोझ ढोना, शरदी गरमी को न गिनना, सन्तोष यह तीन शिक्षा गधे से लेवे ॥ ६८ ॥

गूढमैथुनधर्म्मञ्च काले काले च सङ्ग्रहम् ।

अप्रमादमनालस्यं पञ्च शिक्षेत वायसात् ॥ ६९ ॥

मैथुन कर्म ऋतुवती होने पर तथा गूढ स्थान में, समय समय पर पदार्थों का एकत्र करना, प्रमादरहितता, निरालस्य, यह पांच शिक्षा काक से भी लेनी योग्य हैं ॥ ६९ ॥

युद्धञ्च प्रातरुत्थानं भोजनं सह बन्धुभिः ।
स्त्रियमापद्गतां रक्षेच्चतुः शिक्षेत कुक्कुटात् ॥ ७० ॥

युद्ध विद्या, प्रातःकाल उठना, भाइयों में मिलकर भोजन करना, आपत्तिकाल में स्त्रियों की रक्षा करना, यह चार शिक्षा मुर्गे से भी मनुष्य को लेनी ॥७०॥

कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेशः सुविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥ ७१ ॥

समर्थ जनों को अति बोझ क्या है, साहसी को क्या दूर है, विद्वान् को परदेश क्या, मीठा वचन बोलने वाले को कौन पराया है, अर्थात् कोई भी नहीं ॥७१॥

आपदां कथितः पन्था इन्द्रियाणामसंयमः ।
तज्जयः सम्पदां मार्गो येनेष्टं तेन गम्यताम् ॥ ७२ ॥

इन्द्रियों को वश में न रखना यही आपत्तियों का मार्ग है तथा इन्द्रियों का दमन ही सम्पत्तियों का मार्ग है जिस मार्ग की इच्छा हो उसी मार्ग से चलो ॥७२॥

न च विद्यासमो बन्धुर्न च व्याधिसमो रिपुः ।
न चापत्यसमः स्नेहो न च दैवात् परं बलम् ॥ ७३ ॥

विद्या के समान कोई बन्धु नहीं, रोग के समान कोई शत्रु नहीं है, सन्तान के समान स्नेह नहीं है, ईश्वर के भरोसे के समान कोई ताक़त नहीं है ॥७३॥

समुद्रावरणा भूमिः प्राकारावरणं गृहम् ।
नरेन्द्रावरणा देशाश्चरित्रावरणाः स्त्रियः ॥ ७४ ॥

जैसे समुद्र से घिरी हुई धरती, प्राकार (बाहर दीवारी) से घिरा घर, राजा से घिरे देश, ऐसे ही चरित्रों से घिरी स्त्री होती है (यह चार इन चारों से रक्षित हैं) ॥७४॥

घृतकुम्भसमा नारी तप्ताङ्गारसमः पुमान् ।
तस्माद्घृतञ्च वह्निञ्च नैकत्र स्थापयेद्बुधः ॥ ७५ ॥

घृतपात्रवत् स्त्री है पुरुष तेज अंगारे के समान होता है इस लिये बुद्धिमान् घी और आग को एक स्थान में नहीं रक्खे ॥७५॥

आहारो द्विगुणः स्त्रीणां लज्जा तासां चतुर्गुणा ।
षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृतः ॥ ७६ ॥

पुरुष की अपेक्षा स्त्रियों को भूख दोगुणी, लज्जा चौगुणी, छः गुणा व्यवसाय और काम आठ गुणा होता है ॥७६॥

जीर्णमन्नं प्रशंसीयात् भार्य्यांश्च गतयौवनाम् ।
रणात् प्रत्यागतं शूरं शस्यञ्च गृहमागतम् ॥ ७७॥

पच जाने पर अन्न की तारीफ़ करै, बूढ़ी होने पर स्त्री की बड़ाई करै, युद्ध से आये वीर की तारीफ़ करैं, धान्य की घर आने पर बड़ाई करै (इस से पूर्व कुछ विश्वास नहीं) ॥७७॥

असन्तुष्टा द्विजा नष्टा सन्तुष्टा इव पार्थिवाः ।
सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कुलस्त्रियः ॥ ७८ ॥

बिना सन्तोष के ब्राह्मण नष्ट हो जाते हैं जैसे सन्तोषी राजा । लज्जावती कन्या नष्ट हो जाती है जैसे निर्लज्जा कुल स्त्री ॥ ७८ ॥

अवंशपतितो राजा पुत्रो मूर्खस्य पण्डितः ।
अधनश्च धनं प्राप्य तृणवन्मन्यते जगत् ॥ ७९ ॥

जिस वंश में कभी राजा न हुआ हो ऐसे कुल का वा नीच (पतित) राजा और मूर्ख का बेटा पण्डित होने पर तथा निर्धन मनुष्य धन पाकर यह तीनों संसार को तिनके के समान मानते हैं (अर्थात् किसी को कुछ समझते ही नहीं) ॥७९॥

ब्रह्महापि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।
शशिनस्तुल्यवंशोऽपि निर्द्धनः परिभूयते ॥ ८० ॥

जिस के पास धन बहुत है चाहे कैसा ही पापी क्यों न हो ब्राह्मण को भी मारने वाला हो प्रतिष्ठा होती ही है और जिस पर धन नहीं चाहे चन्द्रमा के सदृश भी निर्मल कुल हो तथापि तिरस्कृत होता है ॥ ८० ॥

पुस्तकस्था तु या विद्या परहस्तगतन्धनम् ।
कार्य्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ॥ ८१॥

पुस्तक की विद्या (अर्थात् कण्ठस्थ न हो) और पराये हाथ में सौंपा धन यह दोनों काम पड़ने पर न वह विद्या ही काम आवे वह न धन ही ॥ ८१ ॥

पादपानां भयं वातात् पद्मानां शिशिराद्भयम् ।
पर्वतानां भयं वज्रात् साधूनां दुर्जनाद्भयम् ॥ ८२ ॥

जैसे वृक्षों को वायु से भय गिरने का है, तथा कमलों को बर्फ=पाले से डर है, पहाड़ों को वज्र से (बिजुली से वा भीतर की आग से पहाड़ फट जाते हैं) डर है, इसी प्रकार साधु जन मूर्ख दुर्जनों से डरते हैं ॥ ८२ ॥

प्राज्ञे नियोज्यमाने तु सन्ति राज्ञस्त्रयो गुणाः ।
यशः स्वर्गनिवासश्च विपुलश्च धनागमः ॥ ८३ ॥

राजा यदि स्वकार्यों में विद्वानों को रखते हैं तो तीन गुण प्राप्त होते हैं सुयश, स्वर्ग का वास और धन ॥ ८३ ॥

मूर्खे नियोज्यमाने तु त्रयो दोषा महीपतेः ।
अयशो नार्थलाभश्च नरके गमनं तथा ॥ ८४ ॥

और यदि मूर्खों को राजा स्वकार्यों में रखते हैं तो तीन दोष प्राप्त होते हैं अपयश, धननाश, नरक वास ॥८४॥

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति ॥ ९१ ॥

जिस मनुष्य ने प्रथमावस्था में विद्या न पढ़ी तथा द्वितीयपन में धन न कमाया, तीसरी अर्थात् वृद्धावस्था में पुण्य न किया तो फिर चौथेपन में क्या करेगा ॥ ९१ ॥

नदीकूले च ये वृक्षाः परहस्तगतं धनम् ।
कार्य्यं स्त्रीगोचरं यत् स्यात् सर्वं तद्विफलम्भवेत् ॥ ९२ ॥

नदी तट के वृक्ष, दूसरे के हाथ गया धन, स्त्रियों के अधिकार का कार्य्य यह सब निष्फल है (उस समय की स्त्रियों को देख कर कहा है) ॥ ९२ ॥

कुदेशमासाद्य कुतोर्थसञ्चयः, कुपुत्रमासाद्य कुतो जलाञ्जलिः ।
कुगेहिनीं प्राप्य गृहे कुतः सुखं, कुशिष्यमध्यापयतः कुतो यशः ।९३।

खोटा देश पाय धन संचय कहां, खोटा पुत्र पाय जल की अंजलि कहां, खोटी स्त्री पाय घर में सुख कहां, खोटे विद्यार्थी को पढ़ा के यश कहां (अर्थात् कहीं भी नहीं) ॥ ९३ ॥

कूपोदकं वटच्छाया श्यामा स्त्री इष्टकालयम् ।
शीतकाले भवेदुष्णं ग्रीष्मकाले च शीतलम् ॥ ९४ ॥

कूवे का जल तथा बड़ के वृक्ष की छाया और जवान स्त्री तथा कच्ची ईंटों का मकान सरदी में गरम रहते हैं और गरमी के दिनों में सर्द हो जाते हैं ॥९४॥

विषं चङ्क्रमणं रात्रौ विषं राज्ञोऽनुकूलता ।
विषं स्त्रियोऽप्यन्यरता विषं व्याधिरवीक्षितः ॥ ९५ ॥

रात्रि का चलना जहर है । राजा की अनुकूलता भी मानना जहर है । व्यभिचारिणी स्त्रियां जहर हैं । रोग का अज्ञात रहना जहर है ॥ ९५ ॥

दुरधीता विषं विद्या अजीर्णे भोजनं विषम् ।
विषं गोष्ठी दरिद्रस्य वृद्धस्य तरुणी विषम् ॥ ९६ ॥

जैसे खोटी पढ़ी विद्या विष है, बिना भूख भोजन विष है, दरिद्रियों को गोष्ठी विष है, इसी प्रकार वृद्ध मनुष्य को जवान स्त्री विष है ॥९६॥

प्रदोष निहतः पन्थाः पतिता निहताः स्त्रियः ।
अल्पबीजं हतं क्षेत्रं भृत्यदोषे हतः प्रभुः ॥ ९७ ॥

सायंकाल में रास्ता मारा जाता है, पतित हो कर स्त्री मारी जाती है, थोड़े बीजवाला खेत तथा नौकर के दोष से मालिक भी मारा जाता है ॥९७॥

हतमश्रोत्रियं श्राद्धं हतो यज्ञस्त्वदक्षिणः ।
हता रूपवती वन्ध्या हतं सैन्यमनायकम् ॥ ९८ ॥

अवेदपाठियों के भोक्ता होने से श्राद्ध नष्ट होता है, विना दक्षिणा के यज्ञ नष्ट होता है, वन्ध्या होने से सुरूपा स्त्री नष्ट है, इसी प्रकार विना अफ़सर के फ़ौज नष्ट होती है ॥९८॥

वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो जपहोमपरायणः ।
आशीर्वादवचोयुक्त एष राजपुरोहितः ॥ ९९ ॥

जो जन–वेद और वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष ये छः अंग हैं) के तत्व का ज्ञाता, ईश्वरस्मरण और अग्नि होत्रादि का कर्त्ता, सदा आशीर्वाद का देने हारा हो सो राजपुरोहित कहाता है ॥ ९९ ॥

कुलशीलगुणोपेतः सर्वधर्म्मपरायणः ।
प्रवीणः प्रेषणाध्यक्षो धर्म्माध्यक्षो विधीयते ॥ १०० ॥

सुन्दर कुलवान् शीलस्वभाव सब वैदिक धर्म में रत हो चतुर (रोबदार) राजाज्ञा का प्रचारक हो सो धर्म्माध्यक्ष जानो ॥१००॥

आयुर्वेदकृताभ्यासः सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
आर्य्यशीलगुणोपेत एष वैद्यो विधीयते ॥ १०१ ॥

जिस ने वैद्यकशास्त्र पढ़ा हो, सुन्दर रूपवान् हो, प्यारा बोल हो, अच्छा कुल हो, शीलादि गुण भूषित हो, उसे वैद्य कहते हैं ॥१०१

सकृदुक्तगृहीतार्थो लघुहस्तो जिताक्षरः ।
सर्वशास्त्रसमालोकी प्रकृष्टो नाम लेखकः ॥ १०२ ॥

जो मनुष्य एक बार कहते ही अर्थ पहचान ले हाथ का फुरतीला हो, अच्छे अक्षर हों तथा सब शास्त्रों को देखे हो ऐसा मनुष्य उत्तम लेखक कहाता है ॥ १०२॥

समस्तनीतिशास्त्रज्ञो वाहने पूजिताश्रमः ।
शौर्य्यवीर्य्यगुणोपेतः सेनाध्यक्षो विधीयते ॥ १०३ ॥

सम्पूर्ण नीति शास्त्र का ज्ञाता, सवारी का जम कर बैठने वाला, शूर वीर, बलवान् इत्यादि गुणयुक्त सेनाध्यक्ष कहाता है ॥१०३॥

मेधावी वाक्पटुः प्राज्ञः परचित्तोपलक्षकः ।
धीरो यथोक्तवादी च एष दूतो विधीयते ॥ १०४ ॥

बुद्धिमान्, बोलने में चतुर, जानकार, पराये चित्त की वृत्ति को पहचानने वाला, बेधड़क, ठीक बात कहने वाला, यह दूत कहाता है ॥१०४॥

पुत्रपौत्रगुणोपेतः शास्त्रज्ञो मिष्टपाचकः ।
शूरश्च कठिनश्चैव सूपकारः स उच्यते ॥ १०५ ॥

बेटे पोतों वाला, गुणी, सूप शास्त्र का ज्ञाता, सुन्दर पदार्थ बनाने वाला, शूर वीर, (मज़बूत) कठिन अंग वाला ऐसा मनुष्य रसोइया कहाता है ॥ १०५ ॥

इङ्गिताकारतत्त्वज्ञो बलवान् प्रियदर्शनः ।
अप्रमादी सदा दक्षः प्रतीहारः स उच्यते ॥ १०६ ॥

इशारों से बात जानने वाला, ताकतवर, देखने लायक, प्रमाद रहित, (दक्ष) चतुर, इन लक्षण युक्त मनुष्य प्रतीहार (द्वारपाल) कहाता है ॥१०६॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥ १०७ ॥

जिस मनुष्य को खुद्अकल नहीं शास्त्र उस का क्या कर सकता है । जैसे नेत्रहीन अन्धे को (दर्पण) आयना क्या दिखावेगा ॥ १०७ ॥

किं करिष्यन्ति वक्तारः श्रोता यत्र न विद्यते ।
नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति ॥ १०८ ॥

जहां सुनने वाले ही नहीं वहां उपदेशक क्या कर सकते हैं । जैसे नंगे मनुष्यों के देश में धोबी क्या करेगा ॥ १०८ ॥

यस्य विज्ञानमात्रेण नृणां प्रज्ञा प्रजायते ।
शतमष्टोत्तरम् पद्यं चाणक्येन प्रयुज्यते ॥ १०९ ॥

जिस के समझ लेनेमात्र से ही मनुष्यों को बुद्धि उत्पन्न होती है ऐसे १०८ श्लोक चाणक्य जी ने बनाये हैं ॥ १०९ ॥

इति

पं० छुट्टनलाल स्वामी परीक्षितगढ़ ज़िला मेरठ निवासी के पास निम्नलिखित पुस्तकें, यज्ञोपवीत और औषध मिल सक्ते हैं

१—ऋग्वादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे द्वितीयोंऽशः। ऐसा और इतना संक्षेप से अब तक इस विषय में कोई पुस्तक नहीं बना। जिन लोगों को भाषा में शास्त्रीय विचारों के समझने की शक्ति हो गई है उन के लिये शब्द प्रमाण द्वारा "मन्त्र ब्राह्मण दोनों वेद हैं वा एक" इत्यादि का निर्णय ७१ प्रमाणों से इस पुस्तक में किया है। इस में मूल अथर्ववेद, तैत्तिरीय, शतपथब्राह्मण, साङ्ख्य, आपस्तम्ब, प्रातिशाख्य, कात्यायन, बौधायन, परिशिष्ट, मीमांसा, मनुस्मृति, ऐतरेय ब्राह्मण, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, कौशिक, अमरकोश, लघुशब्देन्दुशेखर, निरुक्त, सायणाचार्यभाष्य, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वेदान्तसूत्र, गोतमसूत्र, तैत्तिरीय आरण्यक, पिङ्गल, चरणव्यूह और न्यायविस्तर इन २७ ग्रन्थों से बहुत से प्रमाण संग्रह कर के तुलसीराम स्वामी ने बनाया है मूल्य –)।॥

२—ऋग्वादिभाष्यभूमिकेन्दूपरागे प्रथमोंऽशः –)॥ संस्कृत भाषा प्रथमं पुस्तकम्)।॥ द्वितीयम् –)। तृतीयम् =)॥। भजनेन्दु –) अष्टाध्यायी मूल ≡) भर्तृहरिनीति शतक भाषाटीका सहित ≡) गणरत्नमहोदधि कोष, व्युत्पत्ति जान सक्ते हैं १॥) मनुभाष्यभूमिका १॥) ऐतिहासिकनिरीक्षण =) यज्ञोपवीतशङ्कासमाधि –) च-

४२ नेतमाशवीनी वा वेश्यानाटक उर्दू =)॥ कुमारीभूषण -) उपनिषदें संस्कृतभाष्य तथा भाषा टीका दोनों से युक्त लीजिये । ईश ≡) केन ।) कठ ॥।) प्रश्न ॥= मुण्डक ॥।) माण्डूक्य ≡) तैत्तिरीय ।॥) ये ७ उपनिषद् मिला कर ३॥) के हैं परन्तु सातों एक साथ लेने वालों को ३) में ही दिये जाते हैं । विदुरनीति मूल =) दशोपनिषद् मूल ।-) जीवनयात्रा ≡) सीताचरित्र नागरी १ भाग।॥) आयुर्वेद-शब्दार्णव ॥=) प्रश्नोत्तरशतक =) धर्मविषयक व्याख्यान =) शास्त्रार्थकिराना =) यमयमीसूक्त =) प्रबन्धार्कोदय ।-) दमयन्ती स्वयंवरनाटक ≡) चाणक्यनीतिसार-संग्रह भाषा टीका सहित -)। आर्य्यचर्पटपञ्जरिका—भाषाटीका सहित)।

देवरानी जिठानी की कहानी इस पर गवर्नमेंट ने १००) पारितोषिक दिया है =)॥ प्रश्नोत्तररत्नमाला और आर्य्यविवाहमङ्गलाष्टक -)

स्वामी औषधालय परीक्षितगढ़ जि॰ मेरठ

१ ज्वरघ्न भस्म १) तोला ।

नित्य ज्वर तथा तेइया में रामबाण है चातुर्थक में भी कुछ २ काम देती है

२ "अतीसारारि चूर्ण,,

यह चूर्ण सब प्रकार के दस्तों में अब २ दिशा से आओ हाथ पांव धो कर ६ मासे की फंकी कर लो ॥) डिब्बी ।

३ दद्रुघ्न

दाद को धो कर नित्य लगाओ दो तीन दिन में आराम होगा ।) डिब्बी ।

४ अर्क प्रसूतारि

यह अर्क सभी वैद्य जानते हैं मूर्ख नहीं, आधी छटांक प्रातः सायं पीवे । सौभाग्यशुंठीपाक इसके साथ बड़ा उपकारी है १) बोतल १

५ खांसी की गोली ॥

मुख में गेर घुलती रहेगी आठ घड़ी तक रखने से आराम मान होता है १०८ का दाम १)

६ सुर्मा सुधाञ्जन ॥

इसे नेत्र में लगाने से सब नेत्र रोग नष्ट होते हैं कुछ दिन सेवन से फुल्ली तक जाती रहती है नेत्र साफ़ होते हैं प्रायः आज कल बारीक अक्षरों के पढ़ने का प्रचार हो गया है इससे नेत्रों के अनेक रोगों से लोगों को पीड़ित देख बहुत सी दृष्टिवर्द्धक नेत्ररोगनाशक दवाओं को एकत्र कर हम ने सुरमा बनाया

४४ है यह बहुत बिका परन्तु स्याह सुरमा अभ्यन्तभाग में लगा के जाना हमारे कई मित्रों ने ठीक न समझा अतः अब श्वेत भी अञ्जन उसी गुण का त्यार होगया है कीमत वही है फी तोला ॥) जिन को हमारा एजेन्ट बनना हो पत्र व्यवहार करें ।

७-योगराजगुग्गुलवटी-गोली ॥

प्रसिद्ध औषध है । भिन्न २ अनुपानों से अनेक रोगों पर काम देती है और नित्यप्रति की बदहज़मी जो प्रायः लिखने पढ़ने आदि बैठने का काम करने वालों को रहती है १ गोली सायंकाल नित्य खाने से सर्वथा दूर रहेगी १०८ गोली का मूल्य १)

१-डाक व्यय पुस्तकादि सब वस्तुओं का मूल्य के अतिरिक्त ग्राहक को देना होगा ॥

२-कमीशन-४) में ५) तथा ७) में १०) और २०) में ३०) का माल मिलेगा

पता—तुलसीराम वा छुट्टनलाल स्वामी

परीक्षितगढ़ ज़ि० मेरठ